Dr Vandana Suman
Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG SEMESTER - V
MJC - 09 : Social and Cultural Philosophy

"Characteristics of Indian Culture."

(भारतीय संस्कृति की विशेषताएं)

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। इसका इतिहास विभिन्न संस्कृतियों के सम्मिश्रण और समन्वय का इतिहास है। भारत में सदियों से अनेकों संस्कृतियों, सभ्यताओं और प्रजातियों का आना-जाना लगा रहा किन्तु वे भारतीय संस्कृति में विलीन हो गयीं। विभिन्न विदेशी संस्कृति के लोग यहाँ के रंग में इस प्रकार रंग गये कि इनका स्वतन्त्र अस्तित्व ही खत्म हो गया। जैसे - शक, हूण और कुषाण इत्यादि। किन्तु यहाँ कुछ ऐसी संस्कृति के लोग आये जो भारतीय संस्कृति में विलीन नहीं हुए बल्कि यहाँ की संस्कृति को प्रभावित किया और स्वयं भी प्रभावित हुए। इस सन्दर्भ में मुस्लिम एवं पाश्चात्य संस्कृति का नाम आता है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में आदि काल से समन्वय एवं सम्मिश्रण होता रहा है। यही कारण है कि संसार की अनेक प्राचीन संस्कृतियाँ धीरे-धीरे समाप्त हो गई लेकिन अनेकों उतार-चढ़ाव के बाद भी भारतीय संस्कृति ने अपने अस्तित्व को बनाये रखा। इसकी गरिमा समस्त संसार में व्याप्त है।

भारतीय संस्कृति हिन्दू संस्कृति नहीं है। अर्थात भारतीय संस्कृति को हिन्दू संस्कृति का पर्याय मानना गलत एवं अवैज्ञानिक होगा। यह किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष अथवा काल विशेष की देन नहीं है, बल्कि इस देश में आकर बसनेवाली अनेक जातियों की संस्कृतियों के मेल से तैयार हुई है।

वैदिक काल से आजतक भारतीय संस्कृति किसी एक विशेष समूह की धरोहर नहीं रही है बल्कि तब से अबतक इसमें

बाहरी संस्कृतियों एवं भीतरी सांस्कृतिक समूहों के तत्व जुड़ते जा रहे हैं। विभिन्न युगों कालों में भारतीय संस्कृति में परिवर्तन होते रहे हैं। किन्तु यह अपने मूल प्रवाह से अलग दूर नहीं जा सकी। भारतीय संस्कृति के अधिक अन्तर्गत विभिन्न प्रकार एवं आकार के सामाजिक धार्मिक, जन-जातीय समूह के तत्व पाये जाते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति में अनेक प्रकार की विशेषताएँ पायी जाती हैं। जो इस प्रकार हैं—

1. प्राचीनता (Ancient Culture)

विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति का भी स्थान है। यह संस्कृति करीब 5200 वर्ष पुरानी है। विद्वानों का कहना है कि भारतीय संस्कृति ईसा से कई सौ वर्ष पुरानी है। प्राचीन युग में जब यूरोप के निवासी सभ्यता के निम्न स्तर पर थे उस समय भारतीय संस्कृति का विकास हो चुका था। मोहनजोदड़ो हड़प्पा आदि की खुदाईयों के आधार पर सिन्धुघाटी की सभ्यता व संस्कृति के बारे में ज्ञात होता है कि प्रागैतिहासिक काल में हमारी संस्कृति उन्नति के शिखर पर थी। आज हजारों वर्ष बीतने के बाद भी भारत की आदि-संस्कृति जीवित है। आज भी वैदिक धर्म को मानने वाले लोग हैं। अब भी लोग वैदिक मन्त्रों के साथ हवन एवं यज्ञ करते हैं। दूसरी ओर जब देखते हैं तो पता चलता है कि विश्व की अन्य प्राचीन संस्कृतियाँ समय के साथ लुप्त व नष्ट हो गयी। मिस्र की प्राचीन संस्कृति में विशाल पिरामिडों का निर्माण किया जाता था जिसमें मृतकों की ममी बनाकर रखा जाता था। अब यह सब इतिहास बनकर रह गया है।

आज प्राचीन रोमन और यूनानी धर्म के अनुयायी नहीं मिलते और न उनके विचारों से

कोई प्रभावित व प्रेरित होता है। किन्तु भारतीय संस्कृति आज भी जीवित है। भी लोग इससे प्रभावित व प्रेरित होते हैं।

2. सतत विकास एवं निरंतरता (Spontaneous Growth and Continuity) — भारतीय संस्कृति सतत गतिशील रहा नहीं है। नये तत्वों को आत्मसात करनेवाली संस्कृति है। कहने का अर्थ यह है कि यह जड़ नहीं है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति आज भी जीवित है जबकि मिस्र तथा यूरोप की प्राचीन संस्कृतियों का अन्त हो गया। इतिहास के प्रत्येक युग व काल में इसमें नये-नये तत्व जुड़ते चले गये। लेकिन इसके आत्मा रूप व मूल स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। प्रसिद्ध कवि और लेखक रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी पुस्तक (संस्कृति के चार अध्याय) में लिखा है, केवल भारत ही एक ऐसा देश है, जिसका अतीत कभी मरा नहीं, वह बराबर वर्तमान के रथ पर चढ़कर भविष्य की ओर चलता रहा है। भारत का अतीत कल भी जीवित था, आज भी जीवित है और कदाचित आगे भी जीवित रहेगा। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक युग में नये-नये तत्वों का समावेश होता गया और भारतीय संस्कृति की निरंतरता बनी रही।

3. धर्म की प्रधानता (Importance of Religion) भारतीय संस्कृति धर्म प्रधान संस्कृति है। सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्र में धर्म की छाप देखने को मिलती है। धर्म के द्वारा व्यक्ति को सम्पूर्ण जीवन का निर्देशन मिलता है तथा इसको आचरण नियंत्रित होता है। व्यक्ति के जीवन में धार्मिक कृत्यों, अनुष्ठानों एवं रीतियों पर काफी जोर दिया

जाता है। लोग बड़ी निष्ठा से अपने धर्मों का पालन करते हैं। धर्म के द्वारा व्यक्ति के मानवीय गुणों का विकास होता है तथा विभिन्न परिस्थितियों में कर्तव्य का बोध भी होता है। इस प्रकार व्यक्ति का समस्त जीवन धर्म से ओत-प्रोत रहता है।

4. आध्यात्मिकता (Spirituality)

भारतीय संस्कृति में अध्यात्म को ज्यादा महत्त्वपूर्ण माना गया है। इस दृष्टिकोण से व्यक्ति के जीवन में भौतिक व सांसारिक सुख क्षणिक होता है। अतः इन्द्रिय जनित सुख के स्थान पर आध्यात्मिक सुख को सर्वोपरि माना गया है। भारतीय संस्कृति में जीवन का लक्ष्य शारीरिक सुख तथा भौतिक इच्छाओं पर नियन्त्रण करके मोक्ष प्राप्त करना है। जीवन के हर क्षेत्र में अध्यात्म को सर्वोपरि माना गया है। आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति की आत्मा है। इसके अन्तर्गत स्वार्थ की अपेक्षा त्याग पर ज्यादा बल दिया गया है। त्याग से ही मनुष्य को मुक्ति मिलती है। इस प्रकार के विचार से समाज में संघर्ष की स्थिति कम होती है तथा मानवीय मूल्यों का विकास होता है।

5. पुनर्जन्म में विश्वास (Belief in Rebirth)

भारतीय संस्कृति में आत्मा को (अमर माना) गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि आत्मा कभी नहीं मरती और न इसका नाश ही होता है। व्यक्ति संसार में जन्म लेकर कुछ कर्म करता है। इसी कर्म के आधार पर उसका अगला जन्म निर्भर करता है। मृत्यु के बाद व्यक्ति का शरीर खत्म होता है, आत्मा नहीं। जिस प्रकार हम पुराने वस्त्रों को त्याग कर नूतन वस्त्र पहनते हैं उसी प्रकार आत्मा शरीर

को त्याग कर नूतन शरीर धारण करती है। इस प्रकार व्यक्ति अपने कर्मों के आधार पर बार-बार जन्म लेता है। मोक्ष अन्त में मोक्ष को प्राप्त हो जाता है। वर्तमान जीवन को व्यक्ति पिछले जन्म के कर्मों का फल मानता है। वह समझता है कि जैसा कर्म करेगा उसी अनुसार उसे आगामी जन्म में फल मिलेगा। इस भावना के कारण व्यक्ति उच्च कर्मों के लिए प्रेरित होता रहता है ताकि उसका दूसरा जन्म सफल हो सके। पुनर्जन्म में विश्वास के फलस्वरूप मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन अनुशासित रहता है।

6. सहिष्णुता (Tolerance)

सहिष्णुता भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। भारत में सभी धर्मों, जातियों एवं सम्प्रदायों के बीच सहिष्णुता का भाव पाया जाता है। प्रारम्भ से ही भारत में विभिन्न संस्कृति तथा धर्म के लोगों का आना-जाना लगा रहता है। यहाँ किसी का भी दमन नहीं किया गया। सभी धर्मों के अनुयायी अपनी-अपनी धार्मिक विशिष्टताएं को बनाये रहे हैं। डॉ. राधाकृष्णन ने संस्कृति की इस विशेषता के सन्दर्भ में कहा है " सहिष्णुता भारतीय संस्कृति की आत्मा है। भारतीय संस्कृति धार्मिक सहिष्णुता के आधार पर यह मानती है कि रास्तों व तरीकों में अन्तर होने के कारण ईश्वर तक पहुँचने के मार्ग अलग-अलग हो सकते हैं किन्तु लक्ष्य सबका एक ही होता है।

(7) ग्रहणशीलता (Adoptability)

भारतीय संस्कृति में ग्रहणशीलता का गुण पाया जाता है। ग्रहणशीलता के गुण के कारण बाहरी आक्रमण के बावजूद भारतीय संस्कृति का अस्तित्व बना रहा। इस संस्कृति ने विदेशी संस्कृति की उपयोगी बातों को अपनाया। इसके फलस्वरूप भारतीय संस्कृति विशाल तथा व्यापक होती गयी।

ग्रहणशीलता के कारण ही संस्कृति में नित नये-नये तत्व जुड़ते जा रहे हैं जो उसे उपयुक्त तथा अनुकूलनशील बनाने में सहायक होते हैं। जैसे — मूर्ति-पूजा तथा ... भारतीय संस्कृति में कुछ पाश्चात्य संस्कृतियों से भारतीय लिया और कुछ दिया गया है।

8. परिवर्तनशीलता (Changeability) —

भारतीय संस्कृति अपने में परिवर्तन लाकर इन परिवर्तित परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करती है। परिवर्तनशीलता के गुण के कारण भारतीय संस्कृति आज भी जीवित है जबकि मिस्र और यूनान की संस्कृति खत्म हो गयी। क्योंकि उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता जबकि वे किसी समय में ऊँचाई के शिखर पर थीं। परिवर्तनशीलता का तात्पर्य संस्कृति के पतन से नहीं, बल्कि परिवर्तनशील संतुलन व संगठन से है। भारतीय संस्कृति समय और परिस्थिति के अनुसार अपने में परिवर्तन लाती रही है जिससे इसने अपनी निरन्तरता को हजारों वर्षों से बनाये रखा है।

9. उदारता (Generosity) —

उदारता भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। आदिवासी जनता के पास जो अनेक देवी-देवता थे और बाद में जो देवता दूसरी जातियों के साथ आर्यावर्त में बाहर से आये उन सबको हिन्दू धर्म ने स्वीकार कर लिया और समय के दौरान उसने यह सिद्ध कर दिखलाया कि ये देवी-देवता हिन्दू धर्म के ही हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति उदारता का केन्द्र रही है।

10- समन्वय (Amalgamation) —

भारतीय संस्कृति में समन्वय की महान शक्ति है। अन्य संस्कृतियों में पृथक्तावादी गुण पाये जाते हैं। भारतीय संस्कृति में विभिन्न धर्मों व संस्कृतियों का समन्वय है। जैसे — अजमेर शरीफ के दरगाह

में न केवल मुसलमान नजर आते हैं, बल्कि वहाँ हिन्दुओं की अच्छी भीड़ होती है। कहने का आशय यह है कि हिन्दुओं की भी उतनी ही आस्था है, जितनी मुसलमानों की। कई मुसलमान कवियों जैसे - रहीम, कबीर आदि ने अपनी रचनाओं में हिन्दू और इस्लाम धर्मों के प्रति समान रूप से आस्था व्यक्त की है। मुसलमानों के सूफी सम्प्रदाय पर भारत के अध्यात्मवाद और योग-साधना का काफी प्रभाव दिखता है। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति में समन्वय की तीव्र क्षमता है।

11. विभिन्नता में एकता (Unity in Diversity) :- भारत एक विशाल देश है। यह कई प्रान्तों में बँटा है, जिसमें अनेक भाषा-भाषी समूह, धार्मिक समूह तथा प्रजाति समूह आदि पाये जाते हैं। इनके रीति-रिवाज, वेश-भूषा तथा खान-पान में अन्तर पाया जाता है, किन्तु इन विभिन्नताओं में भी एक अखण्ड सार्वभौमिक एकता है। इसी एकता ने सम्पूर्ण भारतीयों को एक सूत्र में बाँध रखा है और हम सब अपने-आपको भारतीय कहते हैं। इनके बीच समान सामाजिक संस्थाएँ, संयुक्त परिवार प्रणाली, वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, समान जीवन मूल्य तथा आदर्श पाये जाते हैं, जो सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार अनेक प्रजाति समूह, धार्मिक समूह तथा सांस्कृतिक समूह के बीच एकता स्पष्ट होती है।

12. लोक-कल्याण की भावना (Feeling of the welfare of man kind) :- भारतीय संस्कृति की एक और प्रमुख विशेषता लोक-कल्याण की भावना है। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत व्यक्तिगत सुख व हित के स्थान पर सामूहिक सुख व हित को ज्यादा प्रधानता

दी गई है। अर्थात सामूहिक हित की तुलना में व्यक्तिगत हित को गौण माना जाता है। भारतीय समाज व्यवस्था में समष्टिवाद पर अधिक बल दिया जाता है। जैसे- संयुक्त परिवार प्रणाली है। इसमें एक व्यक्ति के हित पर ध्यान न देकर सामूहिक हित के अनुकूल कार्य किया जाता है। सामूहिक हित की यही भावना परिवार से बढ़कर पूरे विश्व तक फैल जाती है और हमारा आदर्श 'वसुधैव कुटुम्बकम' हो जाता है। व्यक्तिवादिता में वृद्धि होने पर संस्कृति का विनाश होने लगता है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति व्यक्तिवाद का तिरस्कार करती है।

भारतीय समाज एवं संस्कृति की विशेषता 'अपने आप में अनूठी रही है। किन्तु अब इसमें धीरे-धीरे परिवर्तन होना शुरू हो गया है। वर्तमान युग के औद्योगीकरण, नगरीकरण, पाश्चात्य सभ्यता तथा आधुनिक शिक्षा के फलस्वरूप यहाँ के सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन स्पष्ट हो रहे हैं। आज पुरुषार्थ, वर्ण-व्यवस्था आश्रम-व्यवस्था तथा संयुक्त परिवार के प्रति लोगों की आस्था कम होती जा रही है। आधुनिक समय में इनका महत्व घटता जा रहा है। लेकिन इस परिवर्तन का अर्थ विघटन या अव्यवस्था नहीं है।